Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 09 SEPTEMBER 2025 Pages 16 A.S. Rs 100

P.P.Ashwinbhai and P.B. Ghanshyambhai's Amrut Mahotsav (Platinum Jubilee) - Chicago

सत्संग समाचार

❊ **शुक्रवार, दि. ५ सितंबर को Yoga के शिक्षकोने नये प्रकल्प में Yoga की प्रवृत्तिओं को ज्यादा से ज्यादा बढावा दे एवं समाज को इस प्रवृत्तिओं का ज्यादा लाभ मिले उसके बारे में विचार विमर्श किया। साथ ही Yoga के आचार्य प.भ.डॉ. दिपकभाई परमार का जन्मदिन भी मनाया और जो नि:स्वार्थभाव से और लगन से उन्होंने Yoga की प्रवृत्तिओं के लिये समर्पण किया है उसकी भी सराहना की।**

Meeting of Yoga Group for New Project at "Akshardham" Temple, Powai

❊ **शनिवार, दि. ६ सितंबर को आणंद-गुजरात से हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रशिक्षक प.भ. प्रदीपभाई की धर्मपत्नी और हमारे कईं संवादो की लेखिका प.भ. वेदकुमारीजी खास पवई मंदिर के नये Project की मुलाकात के लिये आयी थी। उन्होंने हमारे नये प्रकल्प में होनेवाली बालमंडल तथा युवाओं की प्रवृत्तिओं को ज्यादा प्रचलित करने हेतु तथा बालकों और युवापिढी को ज्यादा से ज्यादा मार्गदर्शन और लाभ मिले इसके लिये प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. माधुरीबहन, पू. आरतीबहन, प.भ. पूनमबहन सिंघल, प.भ. मंजुबहन खंडेलवाल इत्यादि सक्रिय कार्यकर्ताओं से बालयुवा प्रवृत्तिओं के लिये विचार विमर्श किया तथा अपनी ओर से अच्छा मार्गदर्शन भी दिया।**

With Vedkumariji for New Project activities

❊ **रविवार, दि. ७ सितंबर को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में भजन संध्या 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभावपूर्वक मनाई गई।**

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज को स्वधाम जाकर करीब ४० साल हो गये है। उनकी स्मृति में यह भजन संध्या कई केन्द्रो में होती है। काकाजी कैसे थे और उनका कितना प्रताप है वह उससे समझ में आता है। हमको लगता है कि हमारे मन में जो विचार चलते है वह हमारे गुरु को क्या पता चलेगा? लेकिन काकाजी इतने अंतर्यामी थे कि हमें मन में कोई भी संकल्प होता था या विचार आता था तो वे तुरंत बता देते थे। गुणातीत संत जो जीवन जीते है वह हमारे लिये ही

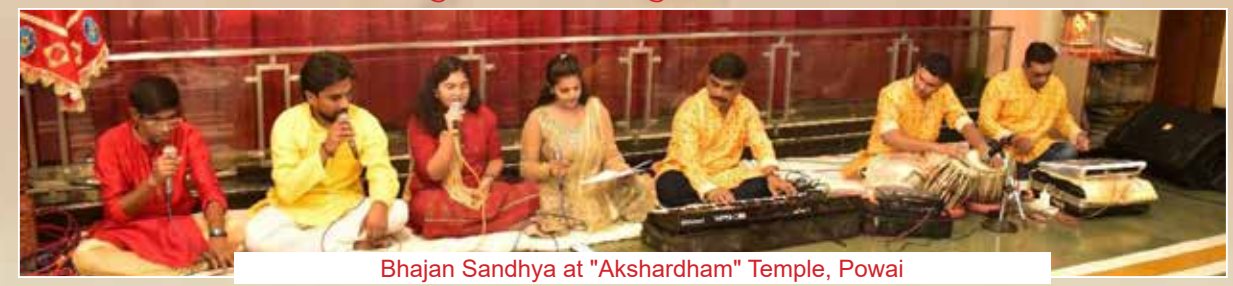

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

होता है। आज खग्रास चंद्रग्रहण है तो हमें अखंड भजन करते रहना है। हमें अच्छा मनुष्य जन्म तो मिला ही है लेकिन ऐसे गुणातीत स्वरुपों का संबंध मिला है तो उसे हमें व्यर्थ नहीं जाने देना है। आज Online की सुविधा से हमारे सभी मंडल में बहुत धुन होती रहती है, तो उसमें जुडकर हमें निरंतर भजन करने की आदत डालनी है। मैं दो बात बताता हूँ। **(१)** हरेक प्रसंग में हमें हसते रहना है। छोटी छोटी बात में हमारा Mood चला जाता है। हमारे मर्जी का कुछ नहीं होता तो Mood खराब हो जाता है। जो होगा वो प्रभु की मर्जी से ही होगा ऐसा मानकर हमेशा खुश रहना चाहिए। **(२) सातत्य** – मैं हररोज आधा घंटा धुन करूँगा ऐसा दृढ निश्चय करना चाहिए, काकाजी कहते थे कि सात दिन तो करो। इसलिये काकाजीने 4 Point Programme में एक सत्कर्म करने की आज्ञा की। तो जितना बताया है उसके पीछे लगे रहो। ऐसा शबरीने किया था। उसको मार्तंड ऋषिने कहा था कि आपके राम जरुर आयेंगे। तब समय तो नहीं बताया था। वह वृद्ध हो गई तब तक उसने राह देखी तो एक दिन भगवान रामचंद्रजी आये। उनका वनवास हुआ वो भगवान की मर्जी से ही था क्योंकि उनको भक्त को मिलना था। हमें जो स्वरुप मिले है उनकी सच्ची पहचान कर लेनी है। तो काकाजीने जो 4 Point Programme बताया है उसे दृढ करें और गुरु की प्रसन्नता के पात्र बने वही प्रार्थना।

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

इसी सभा में भरतभाई, वशीभाई और हितेनभाई प.पू. दिनकरभाई के प्रागट्यदिन समारोह में शामिल होने शिकागो की धर्मयात्रा के लिये दि. १२ को पधारनेवाले थे उस हेतु उनका विदाय समारंभ भी हुआ और सभी हरिभक्तोंने उन्हें खास शुभेच्छा भी दी।

❊ **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई काफी समय के बाद साथ में विदेश की धर्मयात्रा के निकले।**

दि. ११ की देर रात मुंबई से सबसे पहले Amsterdam होकर शिकागो पहुँचे। प.पू. दिनकरभाई, प.भ. पंकजभाई तथा कई युवकों और हरिभक्तोंने अच्छा स्वागत किया। उसी दिन शुक्रवार होने से शिकागो में साप्ताहिक सभा का आयोजन किया गया था, इसलिये तुरंत DesPlaines मंदिर के साधक निवास में चाय-नास्ता करके Marion Street मंदिर में पहुँचे। वहाँ भावपूर्वक सभीने अच्छा स्वागत किया।

At DesPlaines Temple, Chicago

दि. १३ की सुबह को दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, हितेनभाई और अेन्जीबहन Florida जाने निकले। दोपहर को ३ बजे प.भ. दैविकभाई के वहाँ पहुँचे। उनके partner प.भ. चिंतनभाई को मिले और उन्होंने मिलकर जो Pharmacy शुरु की थी, वहाँ उस Store का नाम Purewell Pharmacy रखा था, वहाँ जाकर पुष्पांजलि अर्पण करके धुन की। दैविकभाईने करीब ६.३० बजे महापूजा का आयोजन किया था वहाँ पहुँचे। करीब ४०-४५ हरिभक्तों के साथ कईं बालकों भी शामिल हुए थे। उन सभी की उपस्थिति में सुंदर महापूजा हुई।

With Daivikbhai and Chintanbhai, Fort Myers

At Inauguration of Purewell Pharmacy

Mahapooja at Fort Myers, Florida

दि. १४ की सुबह बोचासण के प.भ. हेमलभाई-प.भ. अल्पाबहन के घर नास्ता किया और उसके बाद प.म. चिंतनभाई के वहाँ दोपहर का भोजन लिया। उनके माता-पिता को भी मिले। उनके पिताजी प.भ. अरविंदभाई आणंद के D.N. High School में Principal थे। उसके बाद Tempa के लिये निकले। वहाँ घाटकोपर-मुंबई के प.भ. अनिलभाई माणेक के मित्र प.भ. उपेन्द्रभाई से मिले। उपेन्द्रभाई वहाँ के India Cultural Center का कार्य सँभालते है। उनकी पत्नी को देह में कईं बिमारीयाँ है, फिर भी उपेन्द्रभाईने सभी की बहुत अच्छी आगता-स्वागता की और आनंद करवाया। उसके बाद वहाँ South Indian लोगों के सत्यनारायण मंदिर के दर्शन किये। अनुपम मिशन से वडील प.भ.डॉ. जीतुभाई शाह भी खास मिलने आये थे। लंडन के प.भ. प्रफुल्लभाई पांखनिया की पुत्री प.भ. निकिताबहन और प.भ. नोअेल से भी मिले।

At Hemalbhai and Alpaben's home, Florida

At Chintanbhai's home

At Sri Satyanarayana Temple in Tampa

At Indian Community Centre - Tampa

करीब शाम को ६ बजे वहाँ से निकलकर प.भ. तुषारभाई और प.भ. मीराबहन शाह के घर भोजन के लिये पधारे। करीब ९ बजे वहाँ से प.भ. राधाबहन पनीकर के पुत्र प.भ. राजभाईने **Resort** में रात्रि के विश्राम की अच्छी व्यवस्था की थी वहाँ पहुँचे। वहाँ प.भ. आर्यनभाई से भी मिले।

With Aryan

दि. १५ की सुबह **Orlando** जाने निकले। दोपहर का भोजन दिनकरभाई के मित्र प.भ. रमेशभाई–प.भ. नीताबहन पंचाल के घर लिया। उनके घर के बाजु में ही उनकी पुत्री प.भ. मुक्तिबहन के घर **Nursery Resort** जहाँ उन्होंने बहुत महेनत करके अनेक प्रकार के वृक्ष और फलों को अच्छा सर्जन किया है वहाँ भी पधरामणी की। उसके बाद करीब ३ बजे Jackson Ville में प.भ. अटवालजी की पुत्री प.भ.डॉ. मनवीन–प.भ.डॉ. गौरवभाई त्रिका के घर पहुँचे। उन्होंने बहुत ही भावपूर्वक सभीका स्वागत किया। रात का भोजन लेकर सभा की।

At Rameshbhai's Home

At Gauravbhai and Manvinben's home, Jacksonville

दि. १६ की शाम करीब १० हरिभक्तों की हाजरी में महापूजा करके प.भ. पारुलबहन तथा प.भ. विपिनभाई को मिले और आनंद किया।

दि. १७ को वहाँ से निकलकर **Flight** लेकर करीब १२.३० बजे शिकागो पहुँचे। करीब साडे तीन घंटे वहाँ ही रुककर **Phoenix** की **Flight** ली। पंकजभाई भी उनके साथ जुडे और करीब साडे पाँच बजे

Phoenix पहुँचे। परीक्षितभाई खास उनका स्वागत करने Airport आये थे। उसके बाद परीक्षितभाई की पत्नी प.भ. भाविशाबहन के भाई प.भ. अमितभाई-प.भ. मितलबहन के घर पधारे। उन्होंने एकादशी निमित्त अच्छा फराल बनाया था। उनके वहाँ भजन करके रात को करीब ११ बजे Arizona(Tucson) प.भ. परीक्षितभाई के घर पहुँचे। वहाँ स्वामिनारायण के संत पू. केशवस्वामी और प.भ. गोपालभाई खास मिलने आये थे, उनके साथ सत्संग किया। पूरे दिन विमान यात्रा में ही करीब साडे १७ घंटे निकल गये थे।

At Amitbhai and Mittalben's home - Arizona

With P. Keshav Swamiji

दि. १८ की सुबह शिकागो के प.भ. प्रकाशभाई के ओपरेशन के लिये धुन करके प.भ. मितालीजी के घर पधारे। उनके पति और दो पुत्रीओं को भी मिले। उनके घर कपिला गाय और मोर तथा उनके चार बच्चे तथा तीन कुत्ते, चार शहामृग, दो घोडे, पोपट जैसे कईं प्राणी संग्रहालय बनाया था। उनको एक भागवत सप्ताह करने की भावना है। फल का प्रसाद लेकर प.भ. किशोरभाई पटेल के Variety H2O ice cream Parlour में पहुँचे। दिनकरभाई भी पधरामणी में साथ में जुडे। किशोरभाईने राजकोट की विरानी कॉलेज में सन्. १९९२ में अभ्यास किया था और ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी के आशीर्वाद भी प्राप्त किये थे। वहाँ सत्संग करके प.भ. प्रकाशभाई की Restaurant Taco Plus में भोजन के लिये पहुँचे। वहाँ के Manager Shri. Santiagoji की पत्नी श्रीमती Maribell का जन्मदिन था इसलिये केक कटिंग करके आनंद किया। उन्होंने अलग अलग व्यंजन बनाये थे वह सभीने लिया। प्रकाशभाई के पाँच Restaurants हो ऐसा उनका संकल्प सिद्ध हो इसलिये प्रार्थना की।

At Prakashbhai's 'Taco Plus' Restaurant

At Kishorbhai Patel's Ice cream parlour,Tuscan

At Mitaliben Jha's home, Tuscan

वहाँ से प.भ. गोपालभाई के Honest Liquor General Store में पधरामणी की। वहाँ भी केशवस्वामीजी साथ में ही थे।

At Gopalbhai's store

At Shashibhai's motel

At Krutangbhai's home

At Parixitbhai's home

गोपालभाई के मित्र शशीकांतभाई की २४ रुम की बडी Motel में गये और ठाकोरजी के समक्ष धुन की। उसके बाद प.भ. कृतांगभाई के घर गये। प.पू. महंतस्वामीजीने उनके पुत्र का नाम श्रीयान रखा है। वहाँ धुन-भजन करके वापस लौटे। प.भ. मोनाबहन को मिले। प.भ. संदीपभाई-प.भ. अश्विनीबहन के घर पधरामणी की। उनका पुत्र Soccer Player और उनकी पुत्री Clasical Dancer है।

At Sandeepbhai and Ashwiniben's home

दि. १९ की सुबह पूजा-आरती-भजन करके प.भ. तपनभाई-प.भ. सोनियाबहन के घर पधारे। उनके छोटे पुत्र दर्श को भी मिले। वहाँ भाविशाबहन को भी मिले। वहाँ सत्संग करके प.भ. बालमुकुंदभाई-प.भ. कुमुदबहन के घर गये। वे पहले शिकागो ही रहते थे और वे रतिकाका के खास मित्र भी है। वो स्वाध्याय परिवार को मानते है। उसके बाद श्री दुर्गा शिवविष्णु मंदिर में प.भ. शास्त्री रमेशजी को भी मिले। उन्होंने भाव से सभीका स्वागत किया। शिव-पार्वती, नवदुर्गा, नवग्रहो जैसे सभी देवताओं का पूजन किया।

At Tapanbhai and Soniaben's home

At Balmukundbhai's home

With Shastri Rameshji at Durga Shiva Vishnu Temple

दोपहर में आराम के बाद प.भ. प्रदीपभाई के वहाँ गये, वे दादा भगवान के भक्त है। वहाँ से मुंबई की सुबह की सभा में जुडे और अच्छा सत्संग हो गया। आरती के बाद रात्रि भोजन के लिये प.भ. केतुलभाई-प.भ. दिव्यांशीबहन के घर पधारे। उनके बेटे प.भ. वरुण से भी मिले। वहाँ भोजन करके सत्संग-आरती करके वापस घर आ गये।

At Pradeepbhai's home

At Ketulbhai and Devyanshiben's home

दि. २० की सुबह Zoom App पर Live शनिवार की वचनामृत ग्रंथ की सभा की। फिर प.भ. इन्दुबहन (प.भ. बेलाबहन) के घर भोजन करने निकले। उन्होंने भाव से सभीको प्रसाद खिलाया। आधा घंटा आराम

करके The FLC Event Center में समूह महापूजा के लिये पहुँचे। गुरुहरि काकाजी महाराज के १०७वे प्रागट्यदिन निमित्त १०७ युगलों की समूह महापूजा की व्यवस्था की गई थी। बहुत ही भक्तिभाव से सभीने महापूजा-भजन-सत्संग का लाभ लिया। रात को करीब ११.३० बजे घर आ गये। परीक्षितभाईने बहुत ही अच्छी तरह से वहाँ के समाज में सत्संग का काम किया है वह इतने सारे हरिभक्तों की हाजरी से महसूस हुआ।

Samuh Mahapooja at The FLC Event Center, Tuscan

दि. २१ की सुबह Tucson Airport पहुँचे, लेकिन Flight के समय में विलंब होने के कारण दोपहर को San Dioego से San Joes करीब ४ बजे पहुँचे। वहाँ भगतसाहब के पुत्र प.भ. चंदनभाई के घर करीब ५ बजे पहुँचे। उन्होंने अपने सभी मित्रों को इस समूह महापूजा में आमंत्रित किया था। करीब ३० युगलोंने समूह महापूजा में भाग लिया। चंदनभाई Google में काम करते है और अपनी कंपनी में सभीके साथ अच्छे संबंध रखें है तो सभीने महापूजा का लाभ लिया। रात को करीब ११.३० बजे उनके वहाँ ही आराम किया।

Samuh Mahapooja at Chandanbhai's home, San Joes

दि. २२ की सुबह करीब १० बजे प.भ. पूनमबहन पाटिल के घर पहुँचे। वहाँ उनके कई मित्रों को मिले और उनके साथ अच्छा सत्संग हुआ। मोक्ष होना ही चाहिए? वापस जन्म लेने में क्या हर्ज है? कर्म का सिद्धांत कैसा है? इन सभी बातों पर अच्छी कथावार्ता हुई। वहाँ से प.भ. सीप्राबहन के वहाँ पधरामणी की। पूनमबहन के घर भोजन करके दोपहर को ३ बजे

At Poonamben Salunke's home

प.भ. सुरेशभाई की पुत्री प.भ. सीमाबहन और प.भ. अनिरुद्धभाई के घर पधरामणी की। वहाँ भी महापूजा की और अच्छा सत्संग हुआ। रात को करीब ११ बजे घर पहुँचकर आराम किया। दि. २३ की सुबह प.भ. अक्षयभाई-प.भ. मयुरीबहन लवगडे के घर पहुँचे। उसी दिन शिकागो की करीब साडे चार घंटे की लंबी Flight लेकर रात ९.३० बजे शिकागो पहुँचे।

At Anirudhbhai and Seemaben's home

At Akshaybhai and Mayuriben's home

दि. २४ की सुबह प.भ. प्रकाशभाई की सेहत अच्छी नहीं थी इसलिये प.भ. भावनाबहन के घर उनको मिलने गये। दोपहर ४.३० बजे प.भ. भाविकभाई मिस्त्री के घर पधरामणी की और उनके माता-पिता प.भ. नरोत्तमभाई-प.भ. नयनाबहन को भी मिले। उसके बाद प.भ. संजीवभाई धवन के पुत्र प.भ. वरुणभाई-प.भ. रुपांशीबहन के घर पधरामणी की। वहाँ भजन-प्रार्थना करके रात का भोजन भी लिया। उसी दिन भारत से प.भ. मिलापभाई-प.भ. रिद्धिबहन इंजीनियर आये थे उनको भी मिले।

At Bhavikbhai's home, Chicago

At Varunbhai's home

At Pankajbhai's home

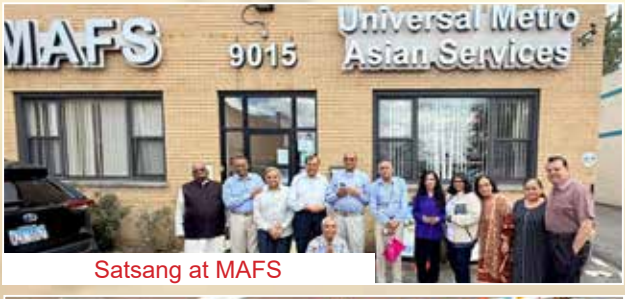

Satsang at MAFS

दि. २५ की सुबह प.भ. पंकजभाई-प.भ. हर्षाबहन के घर पधारे। वहाँ प.भ. सुरेन्द्रभाई से भी मिले। वहाँ से MAFS (Metro Asian Family Service) जो वरिष्ठ नागरिको की संस्था है वहाँ प.भ. नयनाबहन को मिले और सभी वरिष्ठ नागरिको के साथ सत्संग किया।

वहाँ से प.भ. वासंतीबहन के घर दोपहर का भोजन लिया। शाम को करीब ५ बजे प.भ. राजुभाई-प.भ. स्मिताबहन के घर गये। वहाँ पू. केशवस्वामीजी भी मिले। उनके साथ अच्छा सत्संग किया और पतितपावनतत्परम् महाराज की विशेषता के ऊपर श्रीजी महाराज के प्रसंगो से अच्छा सत्संग हुआ।

प.भ. राजुभाई की पुत्री धारा को अच्छी नोकरी मिले इसके लिये धुन भी की। उनका पुत्र प.भ. कुशभाई तो सत्संग में सक्रिय ही है। वहाँ से अनुपम मिशन से जुडे प.भ. अनीषभाई-प.भ. नीताबहन के घर रात्रि भोजन करके सत्संग किया। उसी समय दिल्ली के प.पू. गुरुजी के सेहत के समाचार मिले इसलिये उनकी सेहत अच्छी हो जाये सभीने प्रार्थना करके विशिष्ट धुन की।

At Vasantiben's home

With P. Keshavswami

At Anishbhai's home

दि. २६ की सुबह तारदेव के प.भ. किरीटभाई-प.भ. सेजलबहन और उनकी पुत्री प.भ. परिताबहन के घर पधरामणी की। वहाँ से प.भ. विभाबहन की पुत्री प.भ. सर्वांगीबहन-प.भ. पार्थभाई के वहाँ महापूजा के लिये पधारे। प.भ. पार्थभाई के पिता प.भ. जयंतीभाई की सेहत के लिये धुन भी की।

At Kiritbhai and Sejalben's home

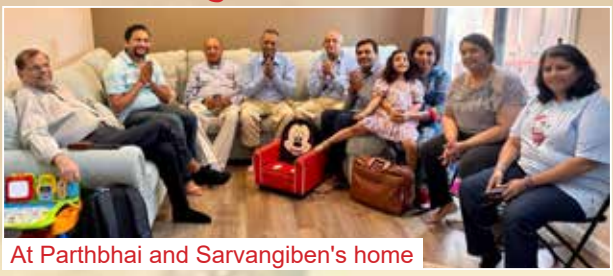
At Parthbhai and Sarvangiben's home

शाम को साधकनिवास में आराम करके रात को शुक्रवार की सभा के लिये **Merion Street** मंदिर गये।

दि. २७ की सुबह प.भ. देवाभाई-प.भ. सुजाताबहन के पुत्र प.भ. सहजभाई की शादी में उन्हें आशीर्वाद देने पधारे। दिनकरभाई के सभी परिवार का कुटुंबभाव अद्भुत था। वहाँ भोजन लेने के बाद कंथारिया के प.भ. केतनभाई और माताजी प.भ. ज्योत्सनाबहन के घर पधरामणी की। उसके बाद प.भ. घनश्यामभाई-प.भ. इंदिराबहन की पुत्री स्मृतिबहन, प.भ. रतिमासा के घर पधारे। रात्रि का भोजन दिनकरभाई की पुत्री प.भ. अेमीबहन-प.भ. विमलभाई के घर लिया। वहाँ कथावार्ता-सत्संग करके आनंद किया।

At Sahajbhai's wedding - Chicago

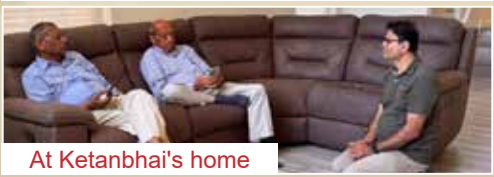
At Ketanbhai's home

At Ratimasa's home

At Vimalbhai and Amyben's home

रविवार, दि. २८ की सुबह Merion Street मंदिर में महापूजा में प.भ. वासंतीबहन, प.भ. हेमालीबहन और प.भ. दक्षीबहन जुडे थे। मंदिर में ही दोपहर का भोजन करने के बाद प.भ. शंकरभाई-प.भ. शांतिबहन के घर पधरामणी की। शाम को Downtown में करीब ५० हरिभक्तों के सानिध्य में प.भ. जेसनभाई-प.भ. सुचीबहन के घर महापूजा रखी गई थी उसमें पधारे।

At Shankarbhai's home

At Jesonbhai's home

दि. २९ की सुबह करीब १० बजे Lincoln में प.भ. रमणभाई-प.भ. पुष्पाबहन और उनके पुत्र प.भ. सुनिलभाई-प.भ.नेहाबहन के घर पधरामणी की। वहाँ जयंतीभाई के सुपुत्र प.भ. भाविनभाई तथा शिकागो से प.भ. शिल्पाबहन प.भ. दासकाका-प.भ. ताराबा को लेकर आये थे। भोजन करने के बाद St.Louis जाने निकले। Mississippi, Missouri, Illinois नदी के संगम में सन् १९८६ में गुरुहरि काकाजी महाराज के अस्थि विसर्जन किये थे, उसी स्थान पर प.भ. हर्षाबहन की माताजी प.भ. मंजुबा के अस्थि विसर्जन किये। सन् २०२२ में इसी स्थान पर कईं हरिभक्तों का अस्थि विसर्जन किया था, उसकी स्मृति ताजा की। वहाँ से St.Louis के Arch देखने पहुँचे। करीब ९ बजे Spring Field में प.भ. भाविनभाई की Motel पर पहुँचे। वहाँ रात्रि का भोजन करके आराम किया।

At Gateway Arch

दि. ३० की सुबह प.भ. भाविनभाई-प.भ. मौलीबहन, प.भ. सुशीलाबहन के घर पधारे। उसके बाद Lincoln में प.भ. सुनीलभाई की Motel में उनकी नई BMW Car के पूजन के लिये पधारे। वहाँ करीब २

At Ramandada and Pushpaba's home

At St. Louis

घंटे आराम करके प.भ. विभाबहन के घर उनके पुत्र प.भ. सहजभाई के जन्मदिन तथा सगाई निमित्त खास आशीर्वाद देने पधारे। वहाँ सभीने सुंदर आरती-भजन-सभा का लाभ लिया और रात को DesPlaines साधक निवास वापस आये।

अगले दिन दि. १ अक्टूबर को दिनकरभाई के प्रागट्यदिन निमित्त सभी युवकोंने वशीभाई के सूचन अनुसार उनके प्रागट्यदिन का सुंदर आयोजन किया था और हर्षोल्लास के साथ केक कटिंग और आशीष का लाभ लिया।

At Bhavinbhai's home

At Chintanbhai's home

At Bakulbhai's home

दि. १ अक्टूबर दिनकरभाई के प्रागट्यदिन पर प.भ. चिंतनभाई-प.भ.हिरलबहन घर भोजन के लिये पधारे।

शाम को **Merion Street** मंदिर में प.भ. सहजभाई-प.भ. शीनाबहन की सगाई निमित्त महापूजा तथा भोजन का आयोजन किया गया था। उसके बाद दिनकरभाई के खास आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए। अंत में सभीने केक कटिंग तथा आईस्क्रीम का प्रसाद ग्रहण किया। वहाँ से प.भ. बकुलभाई-प.भ. रश्मिबहन के घर पधरामणी के लिये पधारे।

At Sahajbhai's Engagement ceremony

P.P. Dinkarbhai's Birthday celebration

दि. २ को दशहरा के दिन अश्विनभाई-घनश्यामभाई **Columbus** से आये। उसके बाद प.भ. जीतुभाई जोशी के वहाँ पधरामणी की। वहाँ धुन-भजन-प्रार्थना करके प.भ. मैत्रीबहन-प.भ. पार्थभाई के घर दोपहर का भोजन किया। मैत्रीबहन की माता प.भ. सुशीलाबहन को भी वहाँ मिले। रात को प.भ. भानुबहन-प.भ. विद्याधरभाई, प.भ. प्रणवभाई-प.भ. प्रणीतभाई के घर भोजन लेकर सत्संग करके वापस घर पधारे।

शुक्रवार, दि. ३ एकादशी के दिन करीब २०० हरिभक्तों की हाजरी में **DesPlaines** मंदिर में सवा घंटे की विशिष्ट धुन सभीने की। उसके बाद प.भ. दासकाका के पुत्र प.भ. रश्मीभाई-प.भ. शिल्पाबहन के घर फराल किया।

At Jitubhai Joshi's home

At Parthbhai and Maitriben's home

At Vidyadharbhai-Bhanuben's home

At Dashkaka's home

P.Dr. Neelamben at "Akshardham" Temple, Powai

❊ सोमवार, दि. १५ सितंबर को गुणातीत ज्योत की संतबहन पू.डॉ. नीलमबहन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। वे सभी से मिले और पवई मंदिर के नूतनीकरण के प्रकल्प के बारे में जानकारी ली और आशीर्वाद भी दिये।

Sarva Pitru Shraddha Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai

❊ हर साल की तरह इस साल श्राद्धपक्ष (भाद्र शुक्ल पूनम १५ से भाद्र कृष्ण अमास ३०) के उपलक्ष्य में 'सर्व पितृश्राद्ध पर्व' 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में रविवार, दि. २१ सितंबर की सुबह मनाया गया। महापूजा में प.पू. राजुभाईने भगवान स्वामिनारायण से लेकर सभी अक्षरनिवासी गुणातीत स्वरुपों, ज्योतिर्धरो एवम् हरिभक्तों की स्मृति एवम् संकल्प करके उनको भावांजलि अर्पण की।

शिकागो से प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज के दिन हम हमारे पूर्वजों को याद करके उनकी आत्मा के मोक्ष के लिये श्राद्ध करते है। गुणातीत सत्पुरुष का श्राद्ध नहीं होता, उनकी स्मृति की जाती है। श्रद्धा से की गई ये महापूजा जरुर पहुँचती है। हमारे पितृओं का ऋण हम अदा करते है। हमारे सभी पितृ अक्षरधाम में ही है। कईं हरिभक्तों को ऐसा लगता है कि हमारे पितृओं के कारण हमारे जीवन में अशांति है। हमें ऐसा बिलकुल भी मानना नहीं है। हम भगवान के भक्त बने और भक्ति करें उससे शांति ही रहती है। श्राद्ध के बारे में वैज्ञानिक खोज हुई है। वैसे हम भाव से जहाँ कहीं भी हो वहाँ से पितृ को श्राद्ध का अर्पण करेंगे तो उन्हें जरुर पहुँचता है। हमें अखंड स्वामिनारायण की धुन करनी है। कोई भी तकलीफ है तो धुन करें, उससे अंतर में शांति मिलेगी ही, उसमें शंका को कोई स्थान नहीं है। गुरुहरि काकाजीने इसलिये एक सत्कर्म करने की आज्ञा दी है। तो हम हर पल सत्संग में डूबे रहे और धुन करते रहे वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज के अंतिम श्राद्ध के दिन सभी पितृओं का श्राद्ध शामिल हो जाता है। हमारे ८४ लाख जन्म के पितृओं का श्राद्ध हम प्रार्थना करके मनाते है। पुरुषोत्तम बोल्या प्रीते पुस्तक में कहा है कि मनुष्यदेह मिलने के बाद प्रगट सत्पुरुष का योग नहीं किया तथा ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म के अधिकारी नहीं बने तो ८४ लाख जीव रुदन करते है। क्योंकि उनको वह मनुष्यदेह मिलता तो वह बात वे कर लेते। हमें जो सत्पुरुष मिले है वे बहुत समर्थ है, क्योंकि वे कईं जन्मों की क्षति दूर करके इसी जन्म ब्रह्मरुप कर देंगे। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि मरने के बाद नहीं, इसी देह में ब्रह्मरुप हो जायें, यदि बडे सत्पुरुष का स्वीकार पूर्णरुप से किया तो। उसका मतलब हमें कभी भी उनमें मनुष्यभाव आने नहीं देना है। उनकी हरेक क्रिया दिव्य होती है ऐसा ही मानना है। महंतस्वामीजीने कहा है कि ७ अरब (अबज) की जनसंख्या में किसी एक का भी अभाव लेंगे तो महाराज अक्षरधाम में प्रवेश नहीं देंगे। इसलिये हमें किसीके भी अभाव-अवगुण में जाना नहीं है।

તા. ૦૧/૦૯/૨૦૨૫

પૂજ્ય અશ્વિનભાઇના અમૃત પ્રાગટ્યપર્વે

પૂજ્ય અશ્વિનભાઈ!
અજોડ, અનુપમ, અચલ, અટલ,
આત્મીય, અવિરત, આધારભૂત, આજીવન,
'અ' પરથી અથવા બીજા પણ ઘણા અક્ષરો પરથી,
કેટલાંય વિશેષણોથી વિભૂષિત છતાંય જન્મજાત સાધુ એવા,
અશ્વિનભાઈને અમૃત પ્રાગટ્યદિને અગણિત નમન અને વંદન...

પ.પૂ. કાંતિકાકાની ઈચ્છાને માન આપી સંતભગવંત સાહેબજીની
આજ્ઞાને શિરોમાન્ય ગણી અશ્વિનભાઈ વિદ્યાનગરથી
તારદેવ રહેવા આવી ગયા અને ગુરૂહરિ કાકાજીએ પણ
તેમને હૈયાના ઉમળકાથી આવકાર્યા અને
અશ્વિનભાઈ તારદેવ મંદિરના જ અંગભૂત સેવક બની રહ્યા.

તારદેવ મંદિરે...
પ્રાતઃકાળથી પણ પહેલાં અને અડધી રાતે પણ,
પરદેશ જનારા કે ત્યાંથી આવનારા
હરિભક્તોનાં પ્રસ્થાન કે આગમન માટે,
આધારભૂત સારથિની સેવા, એકધારી અને
એકસરખી કેટલાંય વર્ષો સુધી માહાત્મ્ય અને ભક્તિથી કરી,
સહુનાં દિલમાં અનોખું અને આદરણીય
સ્થાન મેળવનારા અશ્વિનભાઈ...

દરરોજ વહેલી સવારે...
સહુ મીઠી નિંદ્રા માણી રહ્યા હોય ત્યારે,
તેમની સવારને તાજગીભરી બનાવવા,
શિયાળાની ઠંડી, ઉનાળાની બફાટવાળી ગરમી કે
ચોમાસાની હેલી વરસતી વર્ષામાં પણ, સહુને માટે દૂધ લાવી આપી,
તેને ગરમ કરી, સહુને માટે ચ્હા મૂકીને,
સહુની ચાહ મેળવવાની સેવા કરનાર
અદમ્ય સેવક અશ્વિનભાઈ...

દરરોજ સવારે માટલામાંથી જૂનું પાણી કાઢી, નવું તાજું પાણી ભરી,
સહુનાંય તન અને મનને તાજગીભર્યું રાખવાની અનોખી
સેવા કરનાર અનોખા સેવક અશ્વિનભાઈ...

વર્ષો સુધી દરરોજ વહેલી સવારે...
ઠાકોરજીને પ્રેમથી જગાડી, તેમને સરસ હૂંફાળાં
પાણીથી સ્નાન કરાવી, ભક્તિપૂર્ણ હૃદયે ધીરજથી,
તેમને વહેલી પરોઢે દર્શનીય કરી સહુને એ દર્શનથી
પરિતૃપ્ત કરનાર અદના સેવક અશ્વિનભાઈ...

વર્ષો સુધી એકધારી, નિયમિત,
શિસ્તબદ્ધ જીવનરીતિ અપનાવી,
સહુથી પહેલાં નિત્યકર્મથી પરવારી,
તારદેવ મંદિરે દરેક ઓરડામાં ઝાડુ વાળી,
પોતાના અંતર જેવો જ ચોખ્ખો અને સુઘડ કરનાર,
નીચલી ટેલને ઊંચા ભાગ્યની પદવી સુધી પહોંચાડનાર
મહિમાવંત સેવક અશ્વિનભાઈ...

વર્ષો સુધી કાંતિકાકાની કંપનીમાં નિયમિત જઈ
પોતાનો સ્વધર્મરૂપી કર્મયોગ એવી ચીવટતા ને ખંતથી કર્યો કે
વખત જતાં આજે એ જ કંપનીના સર્વેસર્વા બની ગયા અને
તેમાંય કાંતિકાકા અને પરિવાર પ્રત્યેની ફક્ત ઘંઘાકીય જ નહીં,
પરંતુ સ્વચ્છાએ સ્વીકારેલી ફરજનું એવું અદ્‌ભુત પાલન કર્યું કે
તેમના ભરોસાપાત્ર અંગત પુત્રસમાન બની ગયા.

તેમ છતાં પણ પોતાની પાસે અંગત કોઈ જ મૂડી ન રાખી અને
તેથી સહુ કોઈ તેમના નિઃસ્વાર્થ ત્યાગને અને કર્મયોગને વંદી રહ્યા અને
તેવું જ નિઃસ્વાર્થપણું તો ખરું જ, પણ સાથોસાથ નિર્લેપભાવ
અને નિર્લોભભાવનું પણ બેનમુન જવલંત ઉદાહરણ છે...

ઘનશ્યામભાઈને તેમના કર્મયોગ અને સેવાયોગમાં
એવો તો અદ્‌ભુત સાથ ને પીઠબળ આપ્યું કે
આજની તારીખે પણ ઘનશ્યામભાઈની અનેક
પ્રકારની સેવા અને જવાબદારીઓનું
અશ્વિનભાઈ કોઈપણ પ્રકારની અપેક્ષા વગર વહન કરે છે.
ઘનશ્યામભાઈ સાથેના તેમના
નિરપેક્ષ સખ્યનું એ આગવું અને જવલંત પાસુ છે.

વર્ષો સુધી કાકાજી અને કાંતિકાકા અને અન્ય વડીલો તથા
વખતોવખત અનેકવાર સર્વે ગુણાતીત સત્પુરુષોના સારથિ
તથા અંગત સેવક તરીકે એવી સેવા કરી કે એમને સહુને તેમની
સેવા કરવાની આ અદ્‌ભુત કળા અને
સાથોસાથ નિર્દોષબુદ્ધિએયુક્ત ભરોસાપાત્ર
સેવક તરીકેની અમીટ છાપ ઊભી કરી.

તારદેવ અને પવઈ તો ઠીક પણ ગુણાતીત સમાજના
દરેક કેન્દ્રના વડીલો તથા નાનામાં નાના મુક્ત સાથે પણ
આત્મીયતાનો એવો સંબંધ કેળવ્યો છે કે
કોઈપણ વ્યક્તિ ગમે ત્યારે ગમે તેવી અશક્ય લાગતી સેવા પણ
વિના સંકોચે સહજતાથી તેમને આપી શકે છે અને અશ્વિનભાઈ પણ
પોતાના આગવા કૌશલ્યથી તે સેવાઓ સારધાર પાર પાડી શકે છે.

તારદેવના સંતભાઈઓ સાથેનો તેમનો સરળ અને નિખાલસ મિત્રભાવ
એ એમના વ્યક્તિત્વનું બહુ જ છૂપું પણ અજોડ લક્ષણ છે.
ભરતભાઈ અને વશીભાઈથી ઉંમરમાં મોટા હોવા છતાં
તેમની સાથે દાસત્વભાવે વર્તવાની તેમની જીવનરીતિ ખરેખર તેમની આગવી
વિરલ સિદ્ધિ અને સ્થિતિને દર્શાવે છે.
આવા તો અનેક દિવ્ય ગુણોના ધારક હોવા છતાં પણ સહુ પ્રત્યે,
સાલસતા, સાધુતા, સૌમ્યતાભર્યો ને સેવકભાવભર્યો વર્તાવ
એ તેમની આગવી વિશિષ્ટતા અને ઓળખ છે.

એવા અશ્વિનભાઈને! તેમના અમૃતપર્વે અનંત વંદન સાથે એ જ પ્રાર્થના કે
આપના જેવી કુશાગ્રબુદ્ધિ છતાં દાસત્વભાવ, આગવી સૂઝ છતાં સરળતા,
આર્થિક સદ્ધરતા છતાં નિરપેક્ષ સેવકભાવ, હોંશિયારી છતાં તટસ્થતા વગેરે
જેવા અનેક દિવ્ય કલ્યાણકારી ગુણોમાંથી
યત્‌કિંચિત્ અમ સહુમાં પણ આવે તે જ પ્રાર્થના સહ

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા
મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

તા. ૨૨/૦૯/૨૦૨૫

પરમ ભક્ત ઘનશ્યામભાઈના અમૃતપર્વે...

ઘનશ્યામભાઈ અમીન...
સ્વયં કાકાજી જેમના જામીન!
પૂર્વનો જ સંબંધ અને પૂર્વના જ સંસ્કાર,
જેથી આ જન્મે નિષ્ઠા દૃઢ થવામાં કે
આત્મબુદ્ધિ અને પ્રીતિના રાહે ચાલવામાં,
લાગી જરાય ન વાર!
કાકાજી કહેતા કે
મારી અને કાંતિની મૈત્રીનાં વૃક્ષનું ફળ છે ઘનશ્યામ!
એમને જેનો ભરોસો ને સોંપી શકે કંઈપણ કામ,
મોટાપુરૂષને આવો વિશ્વાસ,
એની આગવી મસ્તી, કેફ અને દમામ.
શાસ્ત્રીજી મહારાજના પ્રસાદીના અને
યોગીજી મહારાજના આગવા,
બા, કાકાજી, પપ્પાજીના તો એ છે આગવા ફગવા!
બીજાને જે દૃઢ થતાં વર્ષોનાં વર્ષ લાગે,
તે નિષ્ઠા, ખુમારી, આત્મીયતા દેખાય સહજ સ્વભાવે.
તારદેવના સંતભાઈઓ સાથે પ્રીતિ એવી અનુપમ,
શીખવવી પડી નથી, થઈ ગળથૂથીમાં જ સહજ–સુગમ.
કર્મયોગ કે સેવાયોગ, એક જ નિશાન છે સામે,
પોતાનું કંઈ છે જ નહીં, બધું જ પ્રભુને નામે.
તારદેવ, નાપા કે વિદ્યાનગર, જ્યાં રહ્યા ત્યાં એ જ નજર,
ભગવાન રાખે તેમ રહેવું, નહીં વિચાર મનના અવર.
સર્વે સ્વરૂપો ને જ્યોતિર્ધરો, માને આગવા અંગત,
સર્વદેશીયતા સહજ દીસે, સહુને ગમે છે એમની સંગત.

જે સેવાની જવાબદારી લે, પૂરી લગનથી નિભાવે,
કાર્ય કરે અને કરાવે એવું, દીપી ઊઠે ને સહુ વધાવે.
મંડપ અને મંચ સુશોભન કે
ભજનોના સંપૂટ કે સંવાદ દ્વારા દર્શન,
મૂર્તિઓનાં શિલ્પ કે મંદિર નિર્માણ જેવાં વિભિન્ન ક્ષેત્રોમાં પણ,
આગવી સૂઝ અને દૃષ્ટિથી કરાવે નેત્રદીપક સર્જન!

ભક્તો પ્રત્યે લાગણી અને પ્રીતિ અંતરમાં અનેરી,
બહારથી કોઈ દેખાવ નહીં, પણ તેમની સેવા અને શ્રેય કાજે,
દિલમાં તત્પરતા અને પ્રાર્થના મુઠ્ઠી ઉંચેરી.
આત્મીયતાનો ઘજાગરો નહીં,
છલકાઈ જાય એવા કોઈ ભાવો નહીં,
અન્યની તકલીફ સમજી શકે,
છૂપી સહાય પહોંચાડી શકે,
કોઈ આગવાપણાનો દેખાડો કે
છૂપી ભક્તિનો દાવો નહીં.
ગુણાતીત સમાજનું ખૂબ શોભે, એવી હૈયે ઘખણા ઘણેરી.

આ બધાં જ આયામોમાં અશ્વિનભાઈનો સાથ અનોખો,
જાણે બન્ને સગા ભાઈઓ, આત્મા ના એકમેકથી નોખો.
ઘનશ્યામભાઈની જવાબદારીનો,
મોટા ભાગનો બોજ, અશ્વિનભાઈ લે નિજ શિર,
ભલે સુકલકડી હોય શરીર,
અડધી સદીથી વધુ સમયથી, નીચવ્યું છે નિજ હીર!
આવી અનુપમ મૈત્રીની, નથી સત્સંગમાં જોડ,
નિઃસ્વાર્થ, નિરપેક્ષ સખ્યનો આ દાખલો છે બેજોડ!
સોનાબાનો પરિવાર, સત્સંગમાં શિરમોર,
કાંતિકાકા, લલિતાકાકી, જ્યોતિબહેન અને તારાબહેન,
જ્ઞાનસ્વરૂપસ્વામી અને માધવજીવનસ્વામી,
ધર્મિષ્ઠાબહેન, સાધનાબહેન અને ભાવનાબહેન,
બધાં જ અક્ષરમુક્તો, અંતરથી ખૂબ બળિયા,
પણ જણાવ્યું નહીં કંઈ જોર.
ઘનશ્યામભાઈ પણ એવા જ,
સત્સંગના ઝળહળતા સિતારા જેવા જ,
ઈલાભાભી, દર્શનભાઈ, યોગેશ્વરીબહેન,
નમનભાઈને કરીએ દિલથી નમન,
ફાલ્ગુનીબહેન, અમિતભાઈને અંતરથી અગણિત વંદન,
વિજયદાસની વિજયપતાકા લહેરાય છે સત્સંગ ગગને.

એવા વહાલા ઘનશ્યામભાઈ!
રહો નિરામય સહુ સંગે,
આશિષ અર્પો એવા કે સહુ આપના ચીલે ચાલીએ,
સેવા અને ભક્તિનાં શાંત વારિમાં મહાલીએ.

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Meeting of Yoga Group for Promotion of new project of Powai at "Akshardham" Temple, Powai on 5th September. (2) P.B. Vedkumari Patel's Visit at "Akshardham" Temple, Powai for Promoting Childrens' activities at the new project of Powai Temple on 6th September. (3) Bhajan Sandhya on 7th September at "Akshardham" Temple, Powai. (4) P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai's USA tour from 12th September to 10th October. (5) Sarva Pitru Shraddh Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai on 21st September. (6) Article for P.P. Ashwinbhai's and P.B. Ghanshyambhai's 75th Pragatyadin on 1st September and 22nd September respectively.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta